दीर्घोत्तरीय प्रश्नोत्तर



* राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालें।

⇒ हिंदी साहित्य के इतिहास में आग एवं राग के कवि के रूप में जाने जाने वाले कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितम्बर 1908 ई. को एक साधारण किसान परिवार में हुआ। इनके पिता श्री रवि सिंह एवं माता श्रीमती मनरूप देवी है। इनका जन्म बिहार प्रांत के बेगुसराय जिले के सिमरिया नामक ग्राम में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के विद्यालय से हुई। सामान्य किसान परिवार में जन्म लेने के बावजूद भी बालक रामधारी सिंह की प्रतिभा असामान्य थी। सामान्य किसान परिवार में जन्म लेने के कारण अपने जीवन में ~~बहुत ही~~ कठिन संघर्षों का सामना करना पड़ा। परंतु रामधारी सिंह बचपन से ही पढ़ने-लिखने में अत्यंत रुचि लेते थे। साथ ही कुशाग्र बुद्धि के धनी थे। पढ़ाई के क्रम में जो भी कठिनाइयाँ आई, सहर्ष उसे स्वीकार कर लिया। कभी भी कठिनाई के समय घबराया नहीं और न ही धैर्य छोड़कर विचलित हुआ। मोकामा घाट के उच्च विद्यालय पढ़ने जाते थे। सिमरिया और मोकामा के बीच की दूरी तीन कोस (9.36 किलोमीटर) थी। जिसमें मोकामा घाट की तपती बालू और उफनती धारा को पार कर उच्च विद्यालय पढ़ाई करने जाते थे और वहीं से मैट्रिक की परीक्षा उच्चतम अंकों से पास की और उच्चतम शिक्षा के लिए पटना चले गए।

सन् 1932 ई. में पटना कॉलेज से इतिहास विषय में स्नातक (बी.ए.) की उपाधि प्राप्त की। अपने गाँव के विद्यालय में कुछ दिन अध्यापक भी रहे। उस समय का दौर संघर्षों का दौर था। उस समय आंदोलन और क्रांति का दौर था। भारतीय जनता परतंत्र की बेड़ियों से निकलकर स्वतंत्रता प्राप्त करना चाहते थे परंतु अंग्रेजों की हिंसा के कारण भारतीय जनमानस में असंतोष, निराशा, हताशा एवं व्याकुलता छाई हुई थी। ऐसे हालात में जनमानस में फैली अशांति को दूर करने के लिए कवियों/राजनेताओं का जन्म स्वाभाविक था। ऐसी स्थिति में भारतीयों के बीच फैली असंतोष, निराशा और अशांति को दूर कर उनके हृदय में क्रांति की भावना को जन्म देने के लिए कवियों ने वीरतापरक कविताएँ लिखी, जो देशभक्ति, राष्ट्रभक्ति और स्वाधीनता से ओत-प्रोत रहती थी। रामधारी सिंह इस काव्यधारा के श्रेष्ठतम कवि हैं जिन्होंने क्रांति और वीरता परक कविताएँ लिखी। जिनका पहला काव्य संग्रह 'हुंकार' प्रकाशित होता है। अपने उपनाम के रूप में 'दिनकर' रखते हैं जो सूर्य का पर्याय है। जिस प्रकार सूरज आग यानि ताप देकर समस्त प्राणियों में नई ऊर्जा का संचार करता है ठीक उसी प्रकार 'दिनकर' अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय जनता में क्रांति को जन्म देकर राष्ट्रभक्ति जगाने का काम किया। इसलिए इन्हें आग और राग का कवि कहा जाता है।

इनकी रचनाओं में प्रेम, श्रद्धा, निष्ठा, समर्पण भी है और आग, क्रांति, ज्वाला, तलवार भी है। जब स्वतंत्रता की बात आती है तो क्रांति लाने के लिए तलवार उठाने के लिए विवश कर देते हैं। अपनी कलम की ताकत से मनुष्य के हृदय में जोश भर देते हैं। जब समाज या राष्ट्र में एकता और अखण्डता की बात आती है तो प्रेम, श्रद्धा, समर्पण आदि का संदेश देते हैं।

रामधारी सिंह 'दिनकर' अपनी प्रतिभा से और सेवा से सबको प्रभावित किया है। इन्हीं सेवाओं से प्रभावित होकर सन् 1948 ई. में भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण की उपाधि से सम्मानित किया। सन् 1962 ई. में भागलपुर विश्वविद्यालय के द्वारा उन्हें डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया। 1963 में भागलपुर विश्वविद्यालय का उपकुलपति बनाया गया। इसी समय प्रधानमंत्री पं. जवाहर-लाल नेहरू के सलाहकार एवं लोकसभा सदस्य भी रह चुके थे। ऐसे महान विभूति का निधन 24 अप्रैल 1974 को हो गया।

रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताओं से युग को वाणी मिली है। उनकी प्रत्येक रचना युग चेतना को जगाने का काम करती है। अपने समय की पीड़ा, परिस्थिति, राष्ट्र की दारुण दीनदशा, अंग्रेजी शासन की क्रूरता को देखते हुए कवि का हृदय क्रांति की ज्वाला से जल उठता है। रामधारी सिंह 'दिनकर' अपनी वीरतापरक कविताओं के माध्यम से भारत की जनता

में क्रांति की ज्वाला और विद्रोह की भावना जगाने का काम करते हैं। दिनकर भारतीय जनता को जगाते हुए कहते हैं –

"क्रांति-धात्रि कविते, जाग उठ, आडम्बर में आग लगा दे।
पतन, पाप-पाखंड जले, जग में ऐसी ज्वाला सुलगा दे।"

(+) कवि अपनी कविता के माध्यम से क्रांति लाने का काम करते हैं। इनके ~~प्रमुख~~ काव्य-संग्रह ~~हुंकार~~ 'बारदोली-विजय संदेश (1928), प्रणभंग (1929), रेणुका (1935), हुंकार (1938), रसवन्ती (1939), द्वन्द्वगीत (1940), कुरुक्षेत्र (1946), बापू (1947), रश्मिरथी (1952), उर्वशी (1961), परशुराम की प्रतीक्षा (1963), रश्मिलोक (1974) आदि हैं। हुंकार काव्य-संग्रह ने युवाओं के हृदय में एक नया जोश भर दिया। जिसे पढ़कर युवाओं के हृदय में क्रांति की ज्वाला सुलग उठी। ये सारी रचनाएँ पद्य रचनाएँ हैं। इसके साथ ही कुछ गद्य रचनाएँ भी हैं जैसे- मिट्टी की ओर, अर्द्धनारीश्वर, मेरी यात्राएँ, देश-विदेश, लोकदेव नेहरु, संस्मरण और श्रद्धांजलियाँ, रेती के फूल, वेणुवन, उजली आग, शुद्ध कविता की खोज, संस्कृति के चार अध्याय आदि। संस्कृति के चार अध्याय (1956) दिनकर की सबसे चर्चित और प्रसिद्ध रचना है जिसमें भारतीय संस्कृति को चार अध्यायों में बाँटा गया है। प्राचीन काल से लेकर 50 के दशक तक की संस्कृति को समेटा गया है। इसी रचना के लिए दिनकर को साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सन 1972 ई. में उर्वशी पर उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।



(+) इनके क्रांतिकारी स्वभाव को देखते हुए रामवृक्ष बेनीपुरी ने कहा है- "दिनकर जी ने देश में क्रांतिकारी आन्दोलन को स्वर दिया।"

हालावादी कवि हरिवंशराय बच्चन दिनकर के संबंध में लिखते हैं कि- "दिनकर जी को एक नहीं, बल्कि गद्य, पद्य, भाषा और हिन्दी-सेवा के लिये अलग-अलग चार ज्ञानपीठ पुरस्कार दिये जाने चाहिए।"

कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' न केवल पद्य-गद्य साहित्य पर काम किया बल्कि 'बाल साहित्य' पर भी समान रूप से अधिकार रखते हैं। बाल-साहित्य की प्रमुख रचनाएँ हैं- चित्तौर का साका, मिर्च का मजा, नीम के पत्ते और सूरज का ब्याह। 'सूरज का ब्याह' कविता में दिनकर ने बड़ा ही सुंदर वर्णन किया है-

उड़ी एक अफवाह, सूर्य की शादी होने वाली है।
वर के विमल मौर में मोती उषा पिरोने वाली है।।
मोर करेंगे नाच, गीत कोयल सुहाग के गाएगी,
लता विटप मंडप-वितान से वंदनवार सजाएगी।
अगर सूर्य ने ब्याह किए, दस-पाँच पुत्र जन्माएगा,
सोचो तब उतने सूर्यों का ताप कौन सह पाएगा।।

कवि दिनकर जैसी परिस्थिति समय की रहती कविता उनकी उसी रूप में ढल जाती थी। जब बच्चों के मनोरंजन की बात आई तो बाल कविताएँ लिखी, जब क्रांति की बात आई तो हुंकार जैसी रचनाएँ लिख क्रांति की ज्वाला सुलगा दी और जब भारतीय जनमानस में चेतना जगाने की बात आई तो कुरुक्षेत्र, बापू, संस्कृति के चार अध्याय जैसी रचनाएँ लिखी तथा प्रेम, समर्पण, सद्भावना की बात आई तो रश्मिरथी, उर्वशी जैसी रचनाएँ कर मनुष्य में मनुष्यत्व को जगाया।

To live is the rarest thing in the world. Most people exist, that is all. -Oscar Wilde

आलोचक नामवर सिंह ने कहा है- "दिनकर जी अपने युग के सचमुच सूर्य थे।"